आकर्षण का सिद्धान्त

सी.पी. कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'
पुष्पेन्द्र कुमार अग्रवाल, प्रधान अनुसंधान सहायक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

आपके जीवन में पदार्पण करने वाली प्रत्येक वस्तु को आप स्वयं अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस आकर्षण का मुख्य कारण वास्तविकता में आपके मस्तिष्क में स्थित कल्पना चित्र होते हैं। जब आप किसी विषय वस्तु का चिन्तन करते हैं तब वह चिन्तन आपके मस्तिष्क की ग्रंथियों में स्थान ग्रहण कर लेता है। और वही विषय वस्तु प्रकट रूप में आपकी ओर आकर्षित हो जाती है। आकर्षण के सिद्धान्तों का प्रारम्भ सृष्टि के प्रारम्भ से हुआ। यह सिद्धान्त ब्रह्माण्ड के संपूर्ण चक्र के निर्धारण के साथ–साथ जीवन के प्रत्येक क्षण तथा जीवन में उपयोग की जाने वाली प्रत्येक वस्तु का निर्धारण करता है। बिना इस विचार के कि आप कौन हैं या आप कहां हैं, आकर्षण का सिद्धान्त सम्पूर्ण जीवन के अनुभव को संचालित करता है। यह प्रभावशाली सिद्धान्त मानव के विचारों के आधार पर कार्य करता है। उदाहरणार्थ– टेलीविजन केन्द्र अपने द्वारा संचालित कार्यक्रम एक निश्चित आवृत्ति पर संचरण टावर की सहायता से प्रसारित करता है यह प्रसारण टेलीविजन पर चित्रों के रूप में रूपान्तरित होकर दिखाई देते हैं। जब आप प्रतिवाद के शब्दों का उच्चारण करते हैं तब आकर्षण का सिद्धान्त आपको इसी रूप में प्रतिफल प्रदान करता है।

किसी विषय विशेष पर जो कुछ आप सोचते हैं, यह निश्चित है कि वही आपके जीवन में अवश्य घटित होगा। यदि आपका स्वभाव इस प्रकार का है कि आप अधिकांशत दूसरों की शिकायतें करना पसन्द करते हैं तब आकर्षण का सिद्धान्त आपके जीवन में बलपूर्वक ऐसे अवसर अवश्य उत्पन्न कर देगा कि आप और अधिक शिकायतें करें। इसी प्रकार यदि आप किसी दूसरे की शिकायत सुनते हैं उस पर ध्यान देते हैं, तथा उस पर विश्वास करते हैं, तब यह सिद्धान्त अधिक से अधिक अवसर स्वयं ही उत्पन्न कर देगा, जिससे कि आपको और अधिक शिकायतें होंगी।

सृष्टि आपके जीवन में नवीन आवृत्तियों के चित्र प्रसारित करती है तथा इसका कदापि ध्यान नहीं रखती कि इन चित्रों में कितनी असंभव दिखने वाली परिस्थितियां हैं। मस्तिष्क जो कुछ विचार करता है उससे सम्बन्धित चित्र आपके जीवन के अनुभव के आधार पर प्रसारित होते हैं। यदि आप नकारात्मक विचारों के बारे में सोचकर चिन्तित होते हैं तब अधिक से अधिक नकारात्मक विचार आपको

आकर्षित कर आपको और अधिक चिन्तित करते हैं तथा इस स्थिति में निरन्तर वृद्धि होती है।

आप जो कुछ अनुभव करते हैं वह वास्तव में सृष्टि संचारित करती है, इसको दूसरे रूप में देखें तो आपके द्वारा अनुभव किये जा रहे विचार वापस सृष्टि में परावर्तित होते हैं तथा सृष्टि को यह संदेश देते हैं कि वर्तमान में आपकी मनोदशा किस प्रकार की है। आप जिस मनोदशा में होते हैं उसी प्रकार के विचार सृष्टि आपको अधिक मात्रा में भेजना प्रारम्भ कर देती है। यही आकर्षण का सिद्धान्त है।

जब आप दुखी या निराश होते हैं तथा अपने विचारों को दुख या निराशा के विचारों से दूर करने का प्रयत्न नहीं करते, तब आप प्रकृति को अपरोक्ष रूप में यह संदेश देते हैं कि 'मुझे ऐसे अधिक अवसर प्रदान किये जायें जो मुझे और अधिक दुखी कर सकें।' इस कारण से आकर्षण का सिद्धान्त आपके जीवन में दुःख भरे चित्रों का अधिक प्रसारण करेगा, परिणामतः आप और अधिक दुख का अनुभव करेंगे। आप अपने विचारों में परिवर्तन करने का प्रयास कर विचारों की आवृत्ति बदल सकते हैं तब आकर्षण का सिद्धान्त पुरानी आवृत्तियों को रोककर आपके जीवन के नये चित्र आपके लिए प्रसारित करेगा व जिससे आप दुख से निकलकर सुख का अनुभव कर सकेंगे।

आप अपने स्वयं के जीवन की अनुभूतियों पर ध्यान केन्द्रित करें। आपको प्रेम एवं परमानन्द का अनुभव प्राप्त होगा, यही परमानन्द की पराकाष्ठा है। आकाश पर ऐसा कोई ब्लैकबोर्ड नहीं है जहां ईश्वर ने आपके जीवन का उद्देश्य लिखा हो। आपको अपने जीवन रूपी ब्लैकबोर्ड को स्वयं ही लिखना है तथा आप जो चाहे इस पर लिख सकते हैं। आपमें कुछ भी परिवर्तन करने की शक्ति विद्यमान है, क्योंकि आप एकमात्र जीव हैं जो अपने विचारों को चयनित कर सकते हैं तथा अपने विचारों की अनुभूति कर सकते हैं। जब आप आकर्षण के सिद्धान्त का प्रयोग करना प्रारम्भ करेंगे तब आपके जीवन में चमत्कारिक परिवर्तन हो सकता है, तथा यह परिवर्तन होना भी चाहिए तथा अवश्य ही होगा।

यदि आप सोचते हैं कि जीवन कठिन एवं संघर्षपूर्ण है तब आकर्षण के सिद्धान्त के अनुसार आप यही अनुभव करते रहेंगे कि जीवन कठिन एवं एक संघर्ष है। यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से सोच रहे हैं, स्वयं से पूछे कि आप कैसा अनुभव कर रहे हैं। जीवन की सुखद घटनायें, मनोरम प्राकृतिक सौंदर्य या आपका मनपसन्द संगीत आपके मन की अनुभूतियों में परिवर्तन करके आपके विचारों की आवृत्ति में क्षणिक परिवर्तन कर सकते हैं। चिन्तन/ध्यान (मेडिटेशन) हमारे विचारों को नियंत्रित करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। प्रारम्भ में एक दिन में मात्र तीन से 10 मिनट तक का ध्यान/चिन्तन विचारों पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

आकर्षण के सिद्धान्त का अनुप्रयोग आप अपने सम्पूर्ण जीवन को निर्मित करने के लिए अग्रिम रूप में कर सकते हैं तथा इसका प्रयोग करने के लिए किसी विशिष्ट समय का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होती। जैसे ही आप अपने विचारों एवं अनुभवों में परिवर्तन लाना प्रारम्भ करेंगे आपके जीवन में स्वतः ही प्रभावी परिवर्तन दिखाई देने लगेंगे। जब आप अपनी स्थिति में परिवर्तन करना चाहे तब सर्वप्रथम आपको अपने विचारों में परिवर्तन करना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि आप ऐसी वस्तुओं की एक सूची तैयार करें, जिसके लिए आप कृतज्ञ अनुभव करते हों। कृतज्ञता वास्तविकता में आपके जीवन में परिवर्तन लाने का एकमार्ग है। महान वैज्ञानिक आइन्सटीन को आकर्षण के सिद्धान्त के बारे में जानकारी थी। अतः वह प्रतिदिन सौकड़ों बार धन्यवाद शब्द का प्रयोग किया करते थे।

क्रियान्वयन प्रक्रम के प्रथम चरण में आप जो चाहते हैं, उसे सर्वप्रथम लिखना शुरू करें। मानसदर्शन (visualization) एक ऐसा प्रक्रम है जिसके बारे में विभिन्न युगों में शिक्षकों एवं अवतारों ने अपने विचार प्रकट किये हैं तथा वर्तमान में भी महान शिक्षकों द्वारा इस पर लोगों को शिक्षा प्रदान की जा रही है। मानसदर्शन की शक्ति का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि जब हम अपने मस्तिष्क में स्वयं की इच्छाओं की पूर्ति का चित्रण करते हैं, इसी प्रकार के विचार एवं अनुभव हमें प्राप्त होने प्रारम्भ हो जाते हैं जब हम कल्पनामग्न होते हैं तब हम सृष्टि में शक्तिशाली आवृत्तियों को उत्सर्जित कर रहे होते हैं।

यह भावनाएं ही हैं जो वास्तविकता में आकर्षण के सिद्धान्त को क्रियान्वित करती है। जब आपके मस्तिष्क में कोई संदेह जन्म लेता है तब आकर्षण का सिद्धान्त तुरन्त ही एक के बाद एक करके अनेकों संदेहों को उत्पन्न कर आपके चारों ओर एक जाल सा बुन देता है। इसके विपरीत जैसे ही आप कृतज्ञतापूर्ण विचारों का समावेश करते हैं तो तुरन्त आपके मस्तिष्क से पुराने चित्र विलुप्त होकर नये चित्र निर्मित होने लगते हैं। विश्वास कीजिए कि आप इसके योग्य हैं तथा यह सब आपके लिए अवश्य सम्भव है। अपनी आंखों को प्रतिदिन कुछ मिनटों के लिए बन्द कर जो कुछ आप चाहते हैं उसके बारे में अन्तःचिन्तन करें। आपको उसी प्रकार के अनुभव प्राप्त होने लगेंगे जैसे कि आप चाहते हैं।

जब आप उन विचारों पर पूर्णतः दृढ़ हो जायेंगे जो आप चाहते हैं, तब सृष्टि आपको प्रत्येक वस्तु आपकी चाहत के अनुसार ही प्रदान करेगी। अपने चारों ओर उपलब्ध वस्तुओं की पूजा, आराधना कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें। ब्रह्माण्ड के गर्भ में उपलब्ध समस्त जानकारियां, एवं मानव के मस्तिष्क द्वारा भविष्य में किये जाने वाले अन्वेषण, सबकी संभावना मानव के विचारों में सन्निहित है। इतिहास में किये गये समस्त क्रियान्वयन एवं अन्वेषण मनुष्य द्वारा ही सृष्टि से प्राप्त किये गये,

तथा इस प्रक्रिया में इस बात का कोई महत्व नहीं था कि मानव को किये गये अन्वेषणों के बारे में पूर्व जानकारी थी या नहीं।

हम सभी आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध हैं, तथा हम सभी एक ऊर्जा क्षेत्र या एक सर्वशक्तिमान या एक क्रियान्वयन स्रोत, एक ईश्वर की सन्तान है। यदि आप आकर्षण के सिद्धान्त के बारे में इस तरह से सोचते हैं, कि हम सभी के एक दूसरे से सम्बद्ध हैं तो आप इस सिद्धान्त की वास्तविक पूर्णता को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं। आप कोई भी मार्ग चयन करने के लिए स्वतंत्र हैं, परन्तु जब आप नकारात्मक विचारों को ग्रहण कर नकारात्मक भावनाओं का क्रियान्वयन करते हैं, तब आप अपने आपको उस एकमात्र सर्वशक्तिमान, ईश्वर से विमुख कर लेते हैं।

जब आप प्रतिस्पर्द्धा करते हैं, तब आप कभी भी विजय प्राप्त नहीं कर सकते भले ही आप सोचते हों कि आपने विजय प्राप्त कर ली है। आकर्षण के सिद्धान्त के अनुसार जब आप प्रतिस्पर्द्धा की भावना रखते हैं तब जीवन के प्रत्येक कार्य में आप अपने विरोध में अनेकों व्यक्तियों एवं परिस्थितियों को पायेंगे तथा अन्ततः आपकी पराजय सुनिश्चित है। ब्रह्माण्ड द्वारा समस्त आवश्यकताओं की आपूर्ति की जाती है अर्थात ब्रह्माण्ड एक समस्त आवश्यक वस्तुओं का एक सार्वभौमिक पूर्तिकार है। इसका अर्थ यह है कि आपमें अपने संसार को निर्मित करने के लिए ईश्वरीय शक्ति प्राप्त है तथा आप इस कार्य को करने में सक्षम है। यदि आप अपने जीवन में किसी कार्य के लिए किसी मार्गदर्शन की आवश्यकता महसूस करते हैं, तब आप इस सम्बन्ध में प्रश्न करें। विश्वास करें, आपको अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त होगा। सत्यता यह है कि प्रकृति आपके जीवन के सभी अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर प्रदान करती है। परन्तु जब तक आप जागरूक नहीं होंगे, आप उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते।

इस सिद्धान्त का अनुप्रयोग, आपके जीवन में धन एवं अन्य प्रत्येक वस्तु, जिसकी आप कामना करते हैं, को प्राप्त करने का शीघ्रतम मार्ग है। इसके द्वारा आप अपने जीवन में सुख एवं खुशी की वे सभी चीजें वापिस प्राप्त कर सकते हैं जिनके द्वारा न केवल आपको प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त होगा वरन् आपकी आवश्यकता की अन्य सभी वस्तुएं भी आपको प्राप्त हो सकती हैं। अधिकांश लोग ऋण प्राप्त करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। यदि आपने ऋण लिया है, तो इस ऋण को पुनः भुगतान करने के लिए एक कार्यक्रम सुनिश्चित करें। समृद्धि के लक्ष्य की ओर अपने विचार केन्द्रित करें। यदि आपके पास भुगतान हेतु बिलों का भंडार इकट्ठा हो जाये तथा आपके पास इन बिलों के भुगतान का मार्ग समझ न आये तब आपके होठों पर ये शब्द न हो कि 'मैं इतना बोझ वहन नहीं कर सकता'। अन्यथा आप और अधिक बिलों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। आपके जीवन में अधिक धन आना असम्भव है यदि आप हमेशा इसकी कमी की ओर अपने विचार केन्द्रित करते रहें।

आपको आकर्षण के सिद्धान्त की जानकारी होने के बाद अब आप मानव जीवन में घटित होने वाली अन्य विभिन्न सत्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, इनमें स्वास्थ्य के बारे में जानकारी भी सम्मिलित है। यदि आप अपने शरीर के विभिन्न तंत्रों को अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं तब इनमें से कोई भी तंत्र टूट सकता है तथा हमारे शरीर में बीमारी अपना स्थान ग्रहण कर लेती है। यह दर्शाता है कि कहीं पर हमारे विचार एवं भावनाएं असान्तुलित हैं परन्तु प्रेम एवं कृतज्ञता द्वारा जीवन के सभी नकारात्मक पहलुओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

जब आप किसी जीवाणविक संक्रमण से ग्रस्त हो जाते हैं तब आपके शरीर के प्रतिरक्षक तंत्र उन जीवाणुओं से आपकी सुरक्षा करते हैं तथा आपको स्वस्थ कर देते हैं। लेकिन बीमारी पर अपने विचार अधिक केन्द्रित करते से स्वस्थ होने में अधिक समय लग सकता है। अतः यदि आप किसी संक्रमण से ग्रस्त हो जाये तो अपने मस्तिष्क में नकारात्मक विचार उत्पन्न न होने दें तथा अपने को पूर्ण स्वस्थ देखने का प्रयास करें। आपको अपने जीवन में अभूतपूर्व परिवर्तन महसूस होगा तथा आप स्वयं को स्वस्थ बना सकेंगे।

सुख एवं खुशी का अनुभव करते हुए अपने जीवन का यापन करें तथा सृष्टि पर निवास करने वाले समस्त लोगों तक अपने सुखद अनुभवों का संचरण करें। आपको पृथ्वी पर ही वास्तविक स्वर्ग की अनुभूति होगी। जब आप अपने समृद्धि के विचारों एवं भावनाओं को चारों ओर विकीर्ण करेंगे तो वे वास्तविक अनुभवों के रूप में आपके जीवन में और अधिक प्राप्त होंगे। हम इस सृष्टि के निर्माता हैं तथा हमारी प्रत्येक इच्छा जिसे हम जिस स्वरूप में निर्मित करना चाहते हैं, हमारे जीवन में हमें उसी स्वरूप में प्राप्त होती है।

जब आप अपने जीवन में किसी वस्तु को आकर्षित करना चाहते हैं तब यह सुनिश्चित करें कि आपकी इच्छाऐं आपके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के विपरीत न हों। जब आप अपने जीवन में सुखद विचार एवं भावनाएं अनुभव करते हैं तो आपके निकट के व्यक्तियों को भी उसी प्रकार की सुखद आवृत्तियां प्रसारित होंगी। आपके जीवन में केवल एक ही व्यक्ति खुशियां ला सकता है और वह आप स्वयं हैं। आप अपने स्वयं में उपलब्ध शक्तियों का जितना अधिक प्रयोग करेंगे उतना अधिक आपको शक्तियां प्राप्त होंगी।

अन्त में आकर्षण के सिद्धान्त का सार यह है कि आप प्रचुरता में सोचें, प्रचुरता में देखें, प्रचुरता पर अनुभव करें तथा प्रचुरता पर ही विश्वास करें।